(2)

25/3/21 उत्तर: सूर का वात्सल्य

प्रथम कारण है कि सूर की वात्सल्य वर्णन में इतनी तल्लीनता कहीं नहीं मिलती। इसका प्रमाण यह है कि सूर बाल मनोविज्ञान के चतुर चितेरे थे। बालकों की अन्तःप्रकृति में प्रवेश करके उन्होंने इसका अद्भुत चित्रण किया।

दूसरा यह कि सूर का वात्सल्य वर्णन अधिक [illegible] से युक्त है। सूर के कृष्ण साधारण बालक [illegible] हैं। सूर के कृष्ण एक साधारण बालक की तरह जो चोरी भी करते हैं, मिट्टी खाते हैं, रूठ जाते हैं, और माखन भी खाते हैं।

तीसरा कारण यह कि सूर को मातृ हृदय प्राप्त था। माता का हृदय ही वात्सल्य भाव को पूरी तरह से समझता है।

चौथा कारण यह कि सूर ने वात्सल्य के साथ ही यशोदा को साकार बना दिया है। यशोदा की भावनाओं के द्वारा सूर का वात्सल्य वर्णन [illegible] उद्घाटित हो उठा है।

सूर के वात्सल्य वर्णन का अवलोकन करने के पश्चात [illegible] कहा जाता है कि [illegible] सूरदास [illegible] है। बालकों के कार्यों में जितना वात्सल्य वर्णन किया है जो सूर के समान [illegible] है। [illegible] वात्सल्य का चित्र [illegible] है वह [illegible] की स्वाभाविकता का [illegible] है। सूर जैसी सफलता नहीं है। तुलसीदास ने भी कवितावली, गीतावली और रामचरितमानस में जो वात्सल्य का वर्णन किया है वह सूर के [illegible] प्रभावित हुआ है। हरिऔध ने प्रिय-प्रवास में कृष्ण के तथा गुप्त जी ने यशोधरा में [illegible] के वात्सल्य का वर्णन किया है वह भी सूर [illegible] है। गुप्त जी के [illegible] में [illegible] है जो [illegible] अधिकार का [illegible] करते हैं। [illegible] तथा [illegible] के बाल वर्णन में स्वाभाविकता का [illegible] है। सूर जैसी सफलता वात्सल्य के क्षेत्र में किसी को नहीं मिली है।

अतः मैं स्पष्टतः कह सकता हूँ कि सूर का दूसरा नाम वात्सल्य है और वात्सल्य का दूसरा नाम सूर है। सूर जैसा वात्सल्य वर्णन का चित्रकार आज तक दूसरा कोई ना हो सका।